विशेष प्रकाशन सं. 90
ISSN : 0972-2351

मात्स्यिकी और जलकृषि में जीविकोपार्जन मसले

भाकृ अनुप
ICAR

केंद्रीय समुद्री मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान
(भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद)
कोचीन - 682 018

भारत में तटीय मछुआरों के बीच की गरीबी और आजीविका की समस्याएं

आर. सत्यदास

केंद्रीय समुद्री मात्स्यकी अनुसंधान संस्थान, कोचीन - 682 018, केरल

भूमिका

राष्ट्र के विकास की भूमिका आर्थिक वृद्धि, गरीबी उन्मूलन और असमता हटाने की रणनीतियों पर निर्भर है। देश में गरीबी उन्मूलन आय की दर की वृद्धि और समान वितरण के अनुपात पर संबंधित है। गरीबी का निर्धारण करना चिंताजनक बात है। गरीबी के मूल्यांकन के लिए यू एन डी पी द्वारा प्रचारित बहु आयामी सूचक है मानव विकास अनुसूची (HDI) और मानव दरिद्रता अनुसूची (HPI)। यह आय, उपयुक्त कलोरी, भूमि और धन उपयोग, पोषण, स्वास्थ्य, आयुकाल, साक्षरता, शिक्षा, स्वच्छ पेय जल, स्वच्छता और अन्य अवसंरचनात्मक सुविधाओं पर आधारित और संबंधित सूचक है।

भारत में पांच वर्षों के अंतराल में गरीबों के अनुपात और संख्या का आकलन करने के विशेषज्ञ ग्रुप (लकडावाला समिति) की रिपोर्ट के आधार पर योजना आयोग, गरीबी का आकलन करता रहता है। ये आकलन समूची गरीबी पर अधारित हैं और गरीबी सूचक हैड काउन्ट अनुपात (HCR) है याने गरीबी रेखा के नीचे आनेवाली आबादी। भौतिक और सामाजिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए निर्धारित खरीदियों के आधार पर नियत रेखा, जो गरीबी रेखा जानी जाती है, के संदर्भ में समूची गरीबी का निर्वचन किया जाता है। गरीबी का प्रासंगिक निर्वचन पूरे आबादी के आय के स्तर पर नियत अनुपात पर आधारित है। एन एस एस ओ के 55 वां पूर्ण आंकडे (जुलाई 1999 से जून 2000 तक) के अनुसार ग्रामीण गरीबी रेखा वर्ष 1999-2000 में 2400 Kcal प्रति शीर्ष प्रति दिवस की तुलना के साथ 327 रुपए प्रति महीना और शहरी क्षेत्र में 2100 Kcal प्रति शीर्ष प्रति दिवस की तुलना के साथ 454 रुपए प्रति महीना है। पहले खपत का व्यय 30 दिनों की

अवधि के दौरान सभी सामग्रियों के लिए आकलित किया जाता था लेकिन 55 वां आंकडे के अनुसार उन्हीं टिकाऊ सामग्रियों केलिए 365 दिनों की अवधि का व्यय आकलित किया जाता है। मानव विकास रिपोर्ट 2005 में भारत की मानव विकास अनुसूची मूल्य 0.602 के साथ 125 वां स्थान पर है। भारत की मानव गरीबी अनुसूची (31.3%) 103 विकासशील देशों जिनके लिए अनुसूची का आकलन किया गया है, में 58 वां स्थान पर है।

भारत में गरीबी रेखा के नीचे रहने वाले लोगों का प्रतिशत जो वर्ष 1993-94 में 36% था वर्ष 1999-2000 में 26% तक कम हो गया। इस के अनुसार भारत में 260.3 दशलक्ष गरीब लोग हैं जिनमें 193.2 दशलक्ष लोग ग्रामीण क्षेत्र में रहते हैं। वर्ष 2007 के दौरान की गरीबी आकलन के अनुसार भारत के समेकित गरीबी अनुपात में 19.3% गिरावट प्रत्याशित है। राष्ट्रीय स्तर की गरीबी राज्यवार गरीबी आकलन का समेकित अनुसूची है। राज्यवार आकलन के अनुसार भारत में सबसे गरीब राज्य उड़ीसा (47%) और बिहार (43%) हैं।

अंतर्राष्ट्रीय खाद्य नीति अनुसंधान संस्थान (IFPRI) द्वारा किए गए अध्ययन के अनुसार 1950 के दशक के प्रारंभ में जब कई सुधार कार्यों से देश में प्रभावशाली ढंग से आर्थिक विकास हुआ तब ग्रामीण गरीबी पर सकारात्मक संघात का उल्लेख नहीं हुआ था। कृषि में सार्वजनिक निवेश, जिससे 65% भारतवासियों को आजीविका प्रदान की जाती है, कम होने पर ग्रामीण गरीबी घटाना मुशकिल होने लगा। हाल के वर्षों में हुए व्यापार उदारीकरण की वजह से कई कृषि उत्पादों की कीमत में असामान्य चंचलता हुई और इसका बुरा असर गरीब कृषकों पर पड गया। कृषि की बढ़ती में हाल के वर्षों में घटती की प्रवणता देखी गई जो वर्ष 1994-95 में 5.0% था, वर्ष 1999-2000 में 8.0% तक घट गयी। भारत में अनाज उत्पादन भी कम हो गया है और आइ एफ पी आर आइ की रिपोर्ट यह चेतावनी देती है कि वर्ष 2020 में भारत में 36 से 64 दशलक्ष टन अनाज की कमी महसूस हो जाएगी।

भारत की समुद्री मात्स्यिकी में गरीबी के सूचक

समुद्री मात्स्यिकी के खुले निर्धारण रीति में मछुआरों द्वारा किए जानेवाले उत्पादन के स्वामित्व, धंधा और समाज-आर्थिक स्तर पर प्रभावित है। मछुआरे के पास होने वाले मत्स्यन औजारों के प्रकार और संख्या के अनुसार उनकी आर्थिक स्थिति का मापन किया जाता है। वर्ष 2003 के आकलन के अनुसार भारत में लगभग 13 प्रतिशत सक्रिय मछुआरों को यान और संभारों का स्वामित्व और 3 प्रतिशत को केवल संभारों का स्वामित्व था। वर्ष 2003-04 में सक्रिय मछुआरों का प्रति शीर्ष निवेश अयंत्रीकृत सेक्टर में 17,024 रुपए से 86,290 रुपए के रेंच में था और यंत्रीकृत सेक्टर में 2,19,319 रुपए था। वर्ष 1997 में समग्र प्रतिशीर्ष निवेश 40,363 रुपए था जब भारत में प्रति मछुआरों के लिए यंत्रीकृत सेक्टर में 1,25,689 रुपए और मोटोरीकृत और अयंत्रीकृत सेक्टरों में क्रमशः 26,835 और 13,979 रुपए का प्रति शीर्ष निवेश किया गया था (सारणी-1)

सारणी-1 भारत में वर्ष 1997-98 & 2003-04 के दौरान प्रति सक्रिय मछुआरों के लिए मत्स्यन उपकरणों का प्रतिशीर्ष निवेश (रुपए)

सेक्टर	1997-98*	2003-04
यंत्रीकृत	1,25,689	2,19,319
मोटोरीकृत	26,835	19,454
अयंत्रीकृत	13,979	17,024
समग्र	**40,369**	**86,290**

* सत्यदास आदि (1998)

आगे मत्स्यन की गहनता का सीधा संबंध प्रतिशीर्ष निवेश तथा जालों की संख्या और प्रकार पर निर्भर होने लगा। भारत में अधिकाधिक अयंत्रीकृत मछुआरों के पास एक या दो जाल थे जो पूरे वर्ष में सक्षम मत्स्यन परिचालन के लिए अपर्याप्त थे।

समुद्री मात्स्यिकी के क्षेत्र में वर्षों के दौरान मोटोरीकृत और यंत्रीकृत मत्स्यन एककों की पूँजीकी आवश्यकता बढ़ने के साथ साथ मालिक परिचालकों का अनुपात घट गया। यंत्रीकृत सेक्टर में 12 प्रतिशत, मोटोरीकृत सेक्टर में 9 प्रतिशत और परम्परागत सेक्टर में 21 प्रतिशत मछुआरों को यान और संभारों का स्वामित्व था। अधिकांश मोटोरीकृत एकक मज़दूरों के परिचालन लागत के अवगाह के बिना पारिवारिक उद्यमों के रूप में परिचालित किए जाते हैं। वित्त और उधार सुविधाओं के अभाव की वजह से ये मछुआरे अभावों से युक्त गरीबी और निम्न आय स्तर के बाहर आधुनिकीकरण की ओर नहीं आ सकते हैं।

समुद्री मात्स्यिकी क्षेत्र के संपातों और अवस्थिति का मुख्य कारण समुद्री मात्स्यिकी की खुलापन और अनियंत्रित मज़दूर गतिशीलता (एफ ए ओ 2005) माना जा सकता है। इन घटकों के अतिरिक्त मत्स्यन समुदाय में बढ़ती हुई आबादी आधुनिक प्रौद्योगिकियों के सहारे से होने वाले जीववैज्ञानिक और आर्थिक अतिमत्स्यन, कम प्रति शीर्ष उत्पादन क्षमतायुक्त मात्स्यिकी प्रबंधन की कमी सम वितरण और टिकाऊ विकास

सारणी - 2 अयंत्रीकृत, मोटोरीकृत और यंत्रीकृत सेक्टर के समाज आर्थिक प्राचल (1980-81 से 2003-04 तक)

मद	1980-81	1997-98	2003-04
यंत्रीकृत			
समुद्री मछली उत्पादन (%)	40	68	66
वार्षिक औसत उत्पादन (टन में)	32	33	35
वार्षिक प्रतिशीर्ष उत्पादन/सक्रिय मछुआरे (कि.ग्रा.)	5260	8130	4175
सक्रिय मछुआरों द्वारा मछली उत्पादन का स्वामित्व (%)	17	24	12
सक्रिय मछुआरे	114000	200000	412596
मोटोरीकृत			
समुद्री मछली उत्पादन (%)	-	19	27
वार्षिक औसत उत्पादन (टन में)	-	13	14
वार्षिक प्रतिशीर्ष उत्पादन/सक्रिय मछुआरे (कि.ग्रा.)	-	2390	1592
सक्रिय मछुआरों द्वारा मछली उत्पादन का स्वामित्व (%)	-	19	12
सक्रिय मछुआरे	-	170000	442581
अयंत्रीकृत			
समुद्री मछली उत्पादन (%)	60	13	7
वार्षिक औसत उत्पादन (टन में)	6.57	1.7	2.4
वार्षिक प्रतिशीर्ष उत्पादन/सक्रिय मछुआरे (कि.ग्रा.)	2590	420	500
सक्रिय मछुआरों द्वारा मछली उत्पादन का स्वामित्व (%)	39	25	21
सक्रिय मछुआरे	348000	650000	365360
कुल			
वार्षिक औसत उत्पादन (टन में)	9.6	9.6	14.8
वार्षिक प्रतिशीर्ष उत्पादन/सक्रिय मछुआरे कि.ग्रा.	3247	2254	2138
सक्रिय मछुआरों द्वारा मछली उत्पादन का स्वामित्व (%)	34	23	14
सक्रिय मछुआरे	462000	1020000	1220577

सुनिश्चित करने की नीतियों का अभाव है।

गुप्त बेरोज़गार और सीमांकन की बढ़ती

सक्रिय मत्स्यन में रोज़गार की होड में खुले अभिगम की वजह से समुद्री मात्स्यिकी की पकड प्रत्याशित अनुपात से अधिक है। सक्रिय मत्स्यन में लगे हुए मछुआरों की संख्या मात्स्यिकी सेक्टर की क्षमता से भी अधिक है और इस से प्रति शीर्ष उत्पादन कम और मत्स्यन दबाव अधिक होता है जिसके फलस्वरूप किशोर मछलियों की अधिक पकड और अवांछित मछलियों की बढ़ती होती है और अंत में संपदा के टिकाऊपन और पर्यावरण की स्थिरता खराब होते हैं। यंत्रीकृत सेक्टर में पकड का अनुपात वर्ष 1980 के 40 प्रतिशत से वर्ष 1997 में 68 प्रतिशत तक बढ़ गया और वर्ष 2003 में 66 प्रतिशत तक कम हो गया। उसी समय यंत्रीकृत मात्स्यिकी पर आश्रित सक्रिय मछुआरों की संख्या क्रमशः 1.14 लाख से 2 लाख और फिर से 4.1 लाख तक बढ़ गया। यह ध्यान देने योग्य बात है कि सक्रिय मछुआरों का वार्षिक प्रति शीर्ष उत्पादन वर्ष 1980 के 5260 कि.ग्रा. से 1997 में 8130 कि.ग्रा. तक बढ़ गया और वर्ष 2003 में 4175 कि.ग्रा. तक घट गया (सारणी-2) इस से यंत्रीकृत मात्स्यिकी सेक्टर में गुप्त रही बेरोज़गारी का व्यक्त रूप मिल जाता है।

यंत्रीकृत सेक्टर में लगे हुए मछुआरों में 75% आनायन मात्स्यिकी में और बाकी 25% अन्य सेक्टरों में लगे हुए हैं। लेकिन मोटोरीकृत सेक्टर में 50% मछुआरे वलय संपाश मात्स्यिकी में ही लगे हुए हैं। विभिन्न मत्स्यन क्षेत्रों में लगे हुए मछुआरों के आय में विभिन्नता है। यह ध्यान देने योग्य बात है कि अयंत्रीकृत सेक्टर लगभग सक्रिय मत्स्यन में 30% रोज़गार प्रदान करता है फिर भी वार्षिक मछली अवतरण में इस सेक्टर का योगदान सिर्फ 7 प्रतिशत है। मोटोरीकृत और यंत्रीकृत सेक्टरों द्वारा देशीय और नोन-मोटोरीकृत सेक्टर का सीमांकन करने पर मछुआरों के बीच विभिन्नता और संघर्ष होना स्वाभाविक है। प्रति मज़दूर का वार्षिक मत्स्यन दिवस की संख्या व्यक्त करती है कि मेहनताना देकर रखनेवाले मज़दूर और अपने पास मत्स्यन उपकरण ने होने वाले मज़दूर बेरोज़गारी से ग्रस्त हैं। मात्स्यिकी का मौसमिक स्वभाव और इस क्षेत्र के जोखिम और अनिश्चितता मछुआरों को कम आय वर्ग के तल में फँस जाने के मुख्य कारण है।

वर्तमान मत्स्यन में लगातार परिवर्तन लाना और मत्स्यन प्रौद्योगिकियों में उन्नयन करने से यान और संभारों की क्षमता बढ़ाने के साथ साथ मछुआरे समुदाय का जीवन स्तर बढ़ाना भी सहायक होता है। आजकल प्रचलित कई मत्स्यन प्रौद्योगिकियाँ तटीय गाँवों में नहीं दिखाई पड़ती हैं। तट संपाश और कम लागत वाले कोटन जाल गायब हो गए हैं। मोटोरीकृत और यंत्रीकृत सेक्टर की प्रतिस्पर्धा का सामना करने के लिए केवल बडे कटामरन/डोंगी/बडे फलकों से निर्मित नावों का प्रचालन अनुयोज्य होता है। उसी प्रकार वर्षों से लेकर मोटोरीकृत सेक्टर में जाल और नाव का आकार बढ़ाते हुए प्रौद्योगिकियों का उन्नयन किया जा रहा है। आजकल मत्स्यन के लिए 2-3 OB इंजन लगाए गए नाव साधारण रूप से प्रचलित है, जो उनकी गतिशीलता और मत्स्यन क्षमताएं बढ़ाते रहते हैं। यंत्रीकृत सेक्टर में प्रति ट्रिप में मत्स्यन दिवसों की संख्या 5 से अधिक तक बढ़ाता रहता है। इस तरह की स्पर्धाओं के कारण अंतर और अंतरा क्षेत्रीय तौर पर मछुआरों, जो आजीविका के लिए मात्स्यिकी की मज़दूरी पर आश्रित हैं, की संख्या सीमांकित की गई है।

मात्स्यिकी क्षेत्र में कई संस्थानीय ऐजेन्सियाँ मौजूद होने पर भी मछुआरे लोग अब भी साहूकारों और व्यापारियों के जाल में फँस गए हैं। इस से वे बचने केलिए संस्थानीय अभिकरणों में दिखाई पडनेवाली चालू रीतियों का परिशोधन करना आवश्यक है। वित्त के उधार के लिए अनुपालन करनेवाली भारी प्रक्रियाओं, संपार्श्विक सुरक्षा की आवश्यकता, अनुपालन करने वाले कार्यों पर अज्ञता, वित्त की अपर्याप्तता और समय पर वित्त की अनुपलब्धता की वजह से मछुआरे लोग उधार के लिए वित्तीय संस्थाओं पर सहारा लेने के लिए विमुख होते हैं। अगर उपर्युक्त

सारणी : 3 विभिन्न यान-संभार संयोजन के प्रति ट्रिप के लागत और आमदनी (2003)

यान-संभार संयोजन का प्रकार	समग्र लंबाई (मीटर)	सकल आमदनी (रु.)	परिचालन लागत (रु.)	कुल परिचालन आय (रु.)
यंत्रीकृत				
आनायन				
एक दिवसीय एकक	12	2474	1937	537
बहु दिवसीय एकक (2-5 दिवस)	14	23351	17648	5703
बहु दिवसीय एकक (छः से अधिक दिवस)	15	44575	27934	16641
गिलजाल				
एक दिवसीय एकक	10	2564	1072	1492
बहु दिवसीय एकक (2-5 दिवस)	13	21054	14716	6338
बहु दिवसीय एकक (छः से अधिक दिवस)	14	61870	40150	21720
कोष संपाश				
एक दिवसीय एकक	10	34682	13548	21134
बहु दिवसीय एकक (2-5 दिवस)	15	115025	72643	42382
डोल जाल (एक दिवसीय)	13	2586	1231	1355
मोटोरीकृत				
गिलजाल युक्त फलक निर्मित नाव	8	1950	1470	480
गिल जाल युक्त डोंगियाँ	9	6590	5500	1090
गिल जाल युक्त फाइबर ग्लास नाव	10	1490	940	550
गिल जाल युक्त कटामरन	10	3530	3000	530
वलय संपाश युक्त डोंगियाँ	8	24000	20000	4000
छोटे आनायकों युक्त डोंगियाँ	7	1720	1100	620
कांटा डोर युक्त फाइबर ग्लास नाव	8	2380	1160	1220
डिंगी / बैग नेट एकक	10	2450	1500	950
अयंत्रीकृत				
गिल जाल युक्त कटामरन	4	735	525	210
गिल जाल युक्त फाइबर ग्लास नाव	9	900	575	325
डग आउट डोंगी/तट संपाश	8	7500	6250	1250
कांटा डोर युक्त कटामरन	4	570	420	150

समस्याओं को पार करने के लिए उचित उपाय ढूँढ नहीं लिए गए तो मछुआरे लोग उधार के लिए साहूकारों और व्यापारियों के पास जाते ही रहेंगे। एक बार उधार लिया गया तो मछुआरे के आय का सिंह भाग ब्याज और पूँजी रकम देने के लिए पर्याप्त होता है और भुगतान नहीं पूरा किया तो उनके जमानतों का जप्त किया जाएगा।

विभिन्न यान और संभारों की शक्यता का लाभ उठाना

विभिन्न यान और संभारों के आकलित लागत और कमाई

का विवरण सारणी-3 में दिया जाता है। यंत्रीकृत वर्ग में बहु दिवसीय मत्स्यन (2-5 दिवस) में लगे हुए 15 मीटर समग्र लंबाई के कोष संपाशों के प्रति ट्रिप के लिए उच्चतम परिचालन आय (42,382 रुपए), सकल आय (1,15,025 रुपए) और परिचालन लागत (72,643 रुपए) का आकलन किया जाता है। उसी प्रकार यंत्रीकृत सेक्टर में एक दिवसीय परिचालन में लगे हुए आनायकों को कम परिचालन आय (537 रुपए) मिलता है। मोटोरीकृत सेक्टर में वलय संपाश लगाए गए डोंगियों को प्रतिट्रिप में उच्चतम आय और गिलजाल लगाए गए फलक निर्मित नावों को न्यूनतम आय मिलता है। अयंत्रीकृत

सारणी : 4 मत्स्यन मज़दूर की प्रति शीर्ष कमाई (2003-04)

यान-संभार संयोजन का प्रकार	प्रति ट्रिप की कमाई (रु.)	ट्रिपों की संख्या	वार्षिक प्रतिशीर्ष कमाई (रु.)
यंत्रीकृत			
आनायक			
एक दिवसीय	120	240	28800
बहु दिवसीय एकक (2-5 दिवस)	280	60	16800
बहुदिवसीय एकक (6 से अधिक)	650	36	23400
गिल जाल			
एक दिवसीय	300	240	72000
बहु दिवसीय (2-5 दिवस)	350	60	21000
बहु दिवसीय (6 से अधिक)	1680	36	60480
कोष संपाश			
एक दिवसीय	500	240	120000
बहु दिवसीय (2-5 दिवस)	2120	60	127200
डोल नेट्टर/डोल नेट (एक दिवसीय)	90	240	21600
मोटोरीकृत			
फलक निर्मित नाव/गिलजाल	194	230	44620
देशज यान/गिल जाल	200	220	44000
फाइबर नोट/गिल जाल	100	240	24000
कटामरन/गिल जाल	150	200	30000
देशजयान/वलय संपाश	100	200	20000
देशज यान/छोटे आनायक	75	180	13500
फाइबर बोट/कांटा डोर	100	240	24000
डोंगी/बैग नेट	60	220	13200
अयंत्रीकृत			
गिल जाल युक्त कटामरन	200	200	40000
गिल जाल युक्त फाइबरबोट	60	210	12600
डग आउट डोंगी/तट संपाश	100	180	18000
गिल जाल युक्त देशज यान	120	240	28800
कांटा डोर युक्त कटामरन	80	240	19200

सेक्टर में कांटा डोर लगाकर कम लागत में परिचालन किए जाने वाले कटामरन को कम आय (150/- रुपए) मिलता है। नोन-मोटोरीकृत सेक्टर में डगआउट डोंगियों/तट संपाश को अधिकतम आय (1,250/- रुपए) मिलता है।

सारणी 3 में दिखाए जाने के अनुसार सभी प्रकार के जाल परिचालन एककों को अधिशेष परिचालन आय मिलता है। फिर भी सभी वर्ग में कम क्षमता या नष्ट से परिचालित एकक होते हैं।

मत्स्यन मज़दूर की प्रति शीर्ष कमाई

मत्स्यन मज़दूर का वार्षिक प्रतिशीर्ष कमाई सारणी 4 में दिखायी जाती है। बहु दिवसीय मत्स्यन (2-5 दिवस) में लगे हुए कोष संपाश परिचालन में लगे हुए मज़दूरों को उच्चतम (1,27,200 रुपए) और उसी वर्ग के आनायकों के मज़दूरों को निम्नतम कमाई (16,800 रुपए) मिलती है। एक दिवसीय मत्स्यन आनायकों को प्रति ट्रिप की प्रति दिवसीय कमाई सब से कम (120 रु.) मिलने पर भी वर्ष में 240 ट्रिप के परिचालन होने की वजह से उनकी वार्षिक कमाई सबसे अधिक होती है। गिलजालों में भी एक दिवसीय एककों की प्रति शीर्ष वार्षिक कमाई बहु दिवसीय एककों की कमाई से उच्चतम होती है क्योंकि बहु दिवसीय एककों की प्रति शीर्ष कमाई यंत्रीकृत एककों में दूसरे स्थान पर आती है।

मोटोरीकृत मत्स्यन एककों में फलक निर्मित नावों/गिल जालों के मज़दूरों की उच्चतम प्रति शीर्ष कमाई (44,620 रुपए) और डोंगी/बैग जाल एककों की निम्नतम कमाई (13,200 रुपए) होती है। अयंत्रीकृत सेक्टर में गिलजाल युक्त कटामरन के मज़दूरों की वार्षिक प्रतिशीर्ष कमाई 40,000 रुपए और गिल जाल युक्त फाइबर बोटों की 12,600 रुपए होती है।

मत्स्यन मज़दूर की कमाई का पराश्रिता अनुपात 1:4 है जो मत्स्यन समुदाय के बीच की गरीबी व्यक्त करता है। मोटोरीकृत क्षेत्र की अपेक्षा यंत्रीकृत क्षेत्र में मज़दूरी ज़्यादा है और 2-5 दिनों के आनायन के लिए मज़दूरों पर आश्रित मछुआरा कुटुम्बों का माहिक प्रति शीर्ष आय 350/- रुपए है फिर भी वे राष्ट्रीय ग्रामीण गरीबी रेखा की सीमा पर है। अयंत्रीकृत सेक्टर में गिल जाल युक्त फाइबर बोटों के मज़दूर भी गरीबी रेखा के नीचे के सार में आते हैं (262.5 रु./महीना) मोटोरीकृत सेक्टर में भी डिंगी/बैग नेट तथा देशज यान/छोटे आनायन के लिए मछुआरा कुटुम्बों को प्राप्त होने वाला हिस्सा (क्रमशः 275/- और 281.25/- रुपए प्रति माह) राष्ट्रीय गरीबी रेखा से कम है। इस प्रकार प्रतिशीर्ष आय का परिचायक आर्थिकी यह व्यक्त करती है कि तटीय ग्रामीण क्षेत्र में रहने वाले 60 प्रतिशत से अधिक मछुआरा लोग गरीबी रेखा के नीचे के स्तर में रहते हैं।

यह एक स्पष्ट बात है कि हमारे देश में स्वतंत्रता प्राप्ति से लेकर आर्थिक विकास के लाभ तटीय ग्रामीण जनता तक नहीं पहुँचते हैं। यह अनुसंधान करने लायक विषय है कि एफ ए ओ के टिकाऊ विकास गरीबी कम करने के लिए उपयोगी सिद्ध नहीं होते हैं। टिकाऊ विकास के लिए रूपाइत दायित्वपूर्ण मात्स्यिकी तथा एफ ए ओ के निर्वचन गरीबी के संघर्षों के साथ मुकाबला करने लायक स्पष्ट नहीं हैं।

मात्स्यिकी सेक्टर में गरीबी के आयाम

मात्स्यिकी सेक्टर में होनेवाले निम्न स्तर की आजीविका, गरीबी और खाद्य असुरक्षा कई आधारभूत घटकों से होते हैं। मछुआरों से संबंधित प्रमुख मामलों में प्रगतिहीन और टिकाऊपन नहीं होनेवाली आजीविका, बढ़ती हुई और उतार-चढ़ाव होने वाली प्रतिस्पर्धा, प्राकृतिक संपदाओं को उपलब्ध और अभिगमन करने की असमर्थता, मानवीय परिश्रम के बिना विदोहन के लिए ऊँची पूँजी के तरीके हैं और ये सब प्राकृतिक संपदा के टिकाऊ विदोहन के लिए हानिकारक, कम या नहीं अधिशेष, कम विश्वासयोग्य तथा सामाजिक सहायता श्रंखला दुर्बल करने लायक, संघातों, आघात और मौसमिकता की प्रवणताओं को सामना करने में अक्षम, कम जानकारी, कम साक्षरता, कुशलता,

क्षमता, और जनता पर आधारित नहीं बल्कि माल पर आधारित हैं (उड़ीसा में 2003 में किए आई सी एम अध्ययन की अंतिम रिपोर्ट) इन सब के अतिरिक्त कम होनेवाली सीमांत कमाई, गुप्त बेरोज़गारी, अंतर और अंतरा क्षेत्रीय सीमांकन, विभिन्न सेक्टरों के बीच के संघर्ष भी मछुआरों के जीवन स्तर पर प्रभावित करते रहते हैं।

सभी समुद्र यात्री मछुआरे जोखिम और मौसमिक परिवर्तनों के अनुसार काम करने वाले हैं और उनकी आजीविका में अनिश्चितता की समस्याएं होना स्वाभाविक है। एक बदल सुविधा के लिए मछुआरों का प्रवास बहुत कम होता है क्योंकि उनको अन्य अच्छी सुविधा नहीं मिल जाती है। मछुआरे लोग अन्य कार्यों के लिए कुशल नहीं हैं और इस वजह से मत्स्यन छोडकर जाना मुशकिल की बात है।

समुद्र विक्षेप, मृदा अपरदन, पर्यावरणीय प्रदूषण और सूनामी जैसे संघात मछुआरों की बुरी हालत के मुख्य कारण हैं। प्राकृतिक विपत्तियों से उनकी आजीविका और संपत्तियों पर हुए नाश से पुनर्जीवित होने के लिए बहुत समय लगता है और इस दौरान प्रभावित लोगों की स्थिति अत्यंत दयनीय होती है। हाल ही में भारतीय महा समुद्र में हुई सूनामी से तटीय समुदायों को बहुत विनाशकारी संघात हुए और उनकी संपत्ति और बंधुजनों के विनाश इससे भी दयापूर्ण थे। इस दुर्घटना के बाद एक साल गुजरने पर भी पुनर्वास और आजीविका के पुनरुद्धार के कार्य प्रगति पर हैं।

मछुआरों की आजीविका के बदल उपाय

खुले समुद्र से अपर्याप्त कमाई मिलने वाले निष्फल मछुआरों के लिए सी एम एफ आर आइ जैसे अनुसंधान एवं विकास संस्थानों द्वारा आजीविका के बदल उपायों का प्रचार किया गया है। इस प्रकार विविधीकृत कार्यविधियों में कुछ नीचे दी जाती है:

- जलकृषि (मीठा पानी, पश्च जल कृषि और समुद्री संवर्धन)
- गुण वर्धित उत्पादों का निर्माण और विपणन
- संघ के कार्यों का लाभ उठाने और परिचालन की आर्थिकी उपयुक्त करने के उद्देश्य से पडोसी संघों/स्वयं सहायक संघों का आयोजन
- तटीय जलकृषि
- स्फुटनशाला की स्थापना
- अल्पकालीन उप व्यवसाय के रूप में वास भूमि क्षेत्र में पशुपालन और कृषि कार्य

नीति विवक्षा

मात्स्यिकी सेक्टर की गरीबी हटाने के लिए रूपाइत नीतियाँ सामान्य उपायों के बावजूद विशेष मुद्दों पर केंद्रित होनी चाहिए। समुद्री उपतटीय मात्स्यिकी संपदाएं अतिमत्स्यन से समाप्ति की सीमा पर है और इसके फलस्वरूप शक्य संपदाओं का नाश होता है। उचित प्रबंधन उपायों द्वारा इन संपदाओं का प्रग्रहण करने से आर्थिक बढ़ती हो जाएगी। नई प्रौद्योगिकियों को स्वीकारने और संपत्ति अधिकारों को उचित रूप से उपयुक्त नहीं करने से इस क्षेत्र में विभिन्नता और आय वितरण में असमता महसूस होते है। इस दिशा में मछुआरों को अवगाह, प्रशिक्षण और प्राथमिक संपदा क्षमता प्रदान करने से अन्य क्षेत्रों तक गतिशीलता का व्यापन किया जा सकता है।

अल्पकालीन या मौसमिक गरीबी से छुटकारा पाना आसान है। बल्कि दीर्घकालीन गरीबी हटाने के लिए मौलिक रूप से नीति उपायों को स्वीकारना होगा (स्पोर्टन, 1998)। विनाशकारी स्थितियों का मुकाबला करने के लिए सामाजिक सुरक्षा के उपाय ढूँढना एक अच्छी रणनीति है। उपर्युक्त सभी नीतियाँ संपदा के आबंटन और संपत्ति उपयोग के नियंत्रण करने लायक होनी चाहिए। घरेलू मामलों के आर्थिक और आर्थिक के अतिरिक्त पहलुओं में महिलाओं की भूमिका और पुरुष और महिलाओं की गरीबी के विभिन्न अवबोध का पहचान करना आवश्यक है।

अगर गरीबी की भिन्नताओं के बीच की अंतरा सामुदायिक विषमताओं पर अवगाह नहीं होने पर गरीबी हटाने की नीतियों का विपरीत संघात हो जाएगा (बेने आदि, 2000)

सुभेद्यता गरीबी का और एक पहलू है, असुरक्षा, जोखिम, आघात और दबावों से भी गरीबी होती है। समुद्र पर आधारित जोखिमों और मौसमिक परिवर्तनों से मात्स्यिकी की हानि होती है। गरीबी हटाने के उपायों को सरकार की नीतियों में प्राथमिकता दी जानी चाहिए जिस से लोगों को गरीबी के ऊपर उठाया जा सकता है। मछुआरा लोगों को बदल रोज़गार देने के उपाय से इस प्रबंधन नीति में प्रगति लायी जा सकती है।